IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक समयमे व्यावसायिक–कामकाजी महिलाओ की परिस्थिति

Digish H. Vyas
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University
School of Humanities and Social Sciences
Assistant Professor – Performing Arts
Ahmedabad, Gujarat, India

Abstract (सार): हम सब जानते है कि पारिवारिक जीवन में पति-पत्नी को कई प्रकार की समस्याओ का सामना करना पड़ता हे! लेकिन ये समस्याएं उस समय और अधिक जटिल हो जाती है, जब इनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध उस परिस्थिति से हो जिसमें गृहिणी को जिविकोपार्जन के लिए घर से बाहर कामकाज के लिए जाना पड़ता है! गाँव हो या क़स्बा, शहर हो या महानगर, हर जगह औरतें कामकाज में व्यस्त नज़र आती है! ये काम घर-गृहस्थी और चूल्हे-चौके का हो या खेतो, मिलो, दफ्तरों, स्कूलों और अस्पतालों में! यह कार्य वह स्वेच्छा से करती हे या मज़बूरी में या किसी दूसरे (प्राय: पति) के अनुरोध या विवश करने पर, उसका उद्देश्य आर्थिक आत्म निर्भरता हो या व्यक्तित्व का विकास, परिवार की आर्थिक स्थिति का सुधार या व्यावसायिक संतुष्टि, स्थिति कोई भी हो, नारी को घर और बाहर के कामकाज में समन्वय के अभाव के कारण, प्राय: शारीरिक और मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है! शुरू शुरू में जब महिलाए, विशेष रूप से उच्च वर्गीय महिलाएं जब छोटी या बड़ी नौकरी करती थी तो उन्हें वरण करना पड़ता था विवाह या व्यवसाय! लेकिन अब स्थिति बदल गई है! वह उड़ना चाहती है इस उड़ने मै समाज का और विशेषत: उसके पति का, पिता का और बेटे का भी साथ होना चाहिए, तभी यह उड़ सकेगी!

□□□ □□□□□ (महत्वपूर्ण शब्द): व्यावसायिक–कामकाजी महिला, महिलाए, संयुक्त परिवार, आत्मनिर्भरता, पारस्परिक सहयोग, पत्नी, माँ, गृहिणी, स्त्री-अस्मिता, समाज का द्रष्टिकोण, देवी

गृहिणी युगों से ही घर से बाहर काम करती रही हैं, फिर क्या कारण है कि आज इस समस्या की चर्चा इतनी अधिक हो रही है? ऐसा महसूस होता है कि कामकाजी महिला की समस्या केवल आधुनिक युग की ही देन है! वास्तव में इसके कई कारण है. महिलाओ में सामान्य और वास्तविक शिक्षा का प्रसार, नगरों की दमघोंटू सभ्यता, संयुक्त परिवार का विघटन, मूल्यों का संकट, असुरक्षा का भाव, महिलाओं की आत्मनिर्भरता और नारी-मुक्ति आंदोलन का प्रभाव आदि! प्रश्न यह है कि कामकाजी महिलाएं आधुनिक परिवर्तित परिस्थितियों से उत्पन्न समस्याओ की चुनौती को कैसे स्वीकार करती है? यह उस समय तक संभव नहीं है जब तक की प्रत्येक महिला अपने निजी अनुभवों के दायरे में इन दो प्रश्नों (मै कौन हू? हम किधर जा रहे है?) के सही उत्तर की तलाश को प्राथमिकता नहीं देती!

परिस्थितियां बदल रही हैं लेकिन परम्पराएं नहीं, भविष्य के प्रति एक अनिश्चतता है, असुरक्षा और आतंक है! भविष्य का यह आघात न केवल मानसिक रोगों को ही जन्म दे रहा है बल्कि परिवार और स्वत्व के विघटन को भी! आधुनिक वैवाहिक जीवन विवशता का अभिशाप बनता जा रहा है! (शुरू शुरू में जब महिलाएं, विशेष रूप से उच्च वर्गीय महिलाएं जब छोटी या बड़ी नौकरी करती थी तो उन्हें वरण करना पड़ता था विवाह या व्यवसाय! लेकिन अब स्थिति बदल गई है!)

वैवाहिक जीवन में तनाव की स्थिति में बाह्य कारणों के अतरिक्त कुछ मनोवैज्ञानिक कारण ऐसे होते है जिनका समाधान आवश्यक है, ये कारण किसी भी विवाह कों तनावपूर्ण बना सकते है! कामकाजी महिला कों विशेष परिस्थिति का सामना करना पड़ता है, उसकी एक भूमिका पत्नी, माँ और गृहिणी के रूप की है और दूसरी और पेशेवर व्यक्ति की! वास्तव में ये दोनों भूमिका तलवार की धार पर चलने के बराबर है! विवाह की सफलता पारस्परिक सहयोग की मांग करती है जबकि व्यवसाय और नौकरी में सफलता प्राय: आत्म-अभिवृद्धि और प्रतिस्पर्धा की मांग करती है! जब ये प्रवृत्तियाँ वैवाहिक जीवन में भी प्रवेश कर जाती है तो न केवल दोनों भूमिकाएं गडडमडड हो जाती हैं बल्कि वैवाहिक संबंधो में भी दरारें पड़ना शुरू हो जाती है!

यह तनाव और भी तीव्र हो जाता है जब पति परंपरागत कुटुम्बाधिपति की अपनी भूमिका नहिं बदलना चाहता और पत्नी मा–गृहिणी कि भूमिका को दूसरे दर्जे कि भूमिका समझने लगती है! पत्नी की प्रतिक्रिया यह होती है कि कामकाजी महिला होने के नाते उसके समान अधिकार है और पति को उसकी इच्छाओं का सत्कार करना चाहिए! उसे यह महसूस करना चाहिए कि कामकाज के प्रति भी उसकी कुछ जिम्मेदारियाँ है जिनके कारण वह पति की कई इच्छाओ की अवहेलना करने पर मजबूर है! यदि नारी अपने मातृत्व की भूमिका कों निभाने की कोशिश करती है और वह अपनी 'पत्नी-माता-गृहिणी' की भूमिका कों सहर्ष स्वीकार करती है तो कामकाजी महिलाओं के लिए अधिक सुविधाएं और अधिकार उसकी इस स्थिति कों सुद्रढ़ बना सकते है!

यह एक कटु सत्य है की नारी और पुरुष जब भावनात्मक तौर पर एक-दूसरे से जूडे होते है तो उन्हें अपने अहं, स्वत्व और स्वतंत्रता पर एक-दूसरे से जुडने और पारस्परिक मानवीय संतुलन के लिए कुछ-न-कुछ अंकुश लगाना ही पड़ता है! पत्नी के विचार में जब वह घर-गृहस्थी चलाने के लिए काम कर रही है और अतिरिक्त बोझ

उठा रही है तो पति कों भी माँ और गृहिणी की भूमिका अदा करनी होगी! यह वो आधार है जहा विवाह की सफलता निर्भर करती है!

सही मायने में स्त्री-अस्मिता का अर्थ होगा स्त्री के प्रति समाज के द्रष्टीकोण और मानसिकता में बदलाव, जिसमे स्त्री का खुद का द्रष्टिकोण भी शामिल है!

उदाहरण, 'जशमा ओडन' – नाटक - स्त्री अस्मिता की कहानी.–

जश्मा एक कामकाजी महिला थी! परिवार के भरण-पोषण के लिए वह मिट्टी का बोझ उठाने कों भी तैयार हुई थी! पत्नी और कामकाजी महिला दोनों की भूमिका अच्छी तरह निभाती थी! जशमा रूडा की पत्नी थी जो एक तालाब खोदने के काम में पति का साथ देती है! वे ओड जनजाति के थे! वे सहस्त्रलिंग तालाब की खुदाई करने के लिए अणहिलवाड पाटन में थे! चौलुक्य वंश के एक राजा सिद्धराज जयसिंह ने जशमा की सुंदरता से मोहित होकर उसे विवाह का प्रस्ताव दिया! उसने उसे रानी बनाने की पेशकश की, लेकिन जशमा ने मना कर दिया! क्रोध में आकर जयसिंह ने उसके पति को मार डाला! जशमा ने अपने सम्मान की रक्षा के लिए चिता में कूदकर (आत्महत्या) कर ली। वह सती हुई जिसके शाप ने सहस्रलिंग तालाब को भी सूखा दिया! सच में यह प्रतिभाव हमारी समाज व्यवस्था के प्रति अपना विद्रोह है!

उदाहरण, 'हेल्लारो' फिल्म

यह फिल्म पितृसत्तात्मक जनादेश से घिरी महिलाओं के एक समूह की कहानी है, हर रात, गाँव के पुरुष बारिश के लिए देवी को प्रसन्न करने के लिए गरबा करते हैं, जबकि महिलाएँ घर पर रहती हैं! जब महिलाएं हर सुबह दूर के एक कुएँ से पानी लाने के लिए निकलती हैं! वहाँ एक आदमी अपने ढोल की थापों के, ताल के माध्यम से उनके जीवन को प्रभावित करता है! उन कुछ घंटों के अलावा, उनकी ज़िंदगी पुरुषों द्वारा बनाए गए नियमों से बंधी होती हैं, जिनका उन्हें पालन करना होता है! जो एक पितृसत्तात्मक समाज के कारावास, दमन और उत्पीड़न के कारण वर्षों से दबी हुई है और अब मुक्त होना चाहती है! इस फिल्म में गरबा के माध्यम से, ये महिलाएं अपने भीतर की आवाज़ को ढूंढती हैं!

वास्तविकता यह है की पुरुष जो देवी की पूजा तो करते हैं लेकिन अपने जीवन में महिलाओं का अनादर करते हैं।

तुमने मुझसे कहा

मै देवी हूँ

और मुझे बिठा दिया

घर के तहखानो में

ठाकुरजी के साथ!

तुमने मुझसे कहा

मै पतिव्रता हूँ

और सती नाम देकर

जला दिया पति के साथ!

तुमने मुझसे कहा मै

संपत्ति हूँ

और लगा दिया दाव पर

गर्व के साथ!

तुमने मुझसे कहा

मै इज्जत हूँ

खानदान की

और कैद कर दिया घूँघट के साथ....!

कवियत्री कहती है की वह न देवी बनना चाहती है, न सती बनना चाहती है, न देवदासी बनना चाहती है और न ही वस्तु बनना चाहती है!

मुझे उम्मीद है

मै उड़ने लगूंगी

नाप लूंगी नीले आकाश को

अकेली नहीं तुम सबको साथ ले

और तुम देखोगे

वह जो तुम देखना चाहोगे मेरे साथ

अंत मै कवियत्री कहती है की वह उड़ना चाहती है इस उड़ने मै समाज का और विशेषत: उसके पति का, पिता का और बेटे का भी साथ होना चाहिए, तभी यह उड़ सकेगी!

सन्दर्भ ग्रंथ:

१) स्त्री लेखन की स्त्री अस्मिता – शरण्या टी. एस.

२) कविता - सुष्मा चौहान 'किरण'

३) स्त्री विमर्श – रमणिका गुप्ता

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation